दैत्य शांगमियांग की कहानी

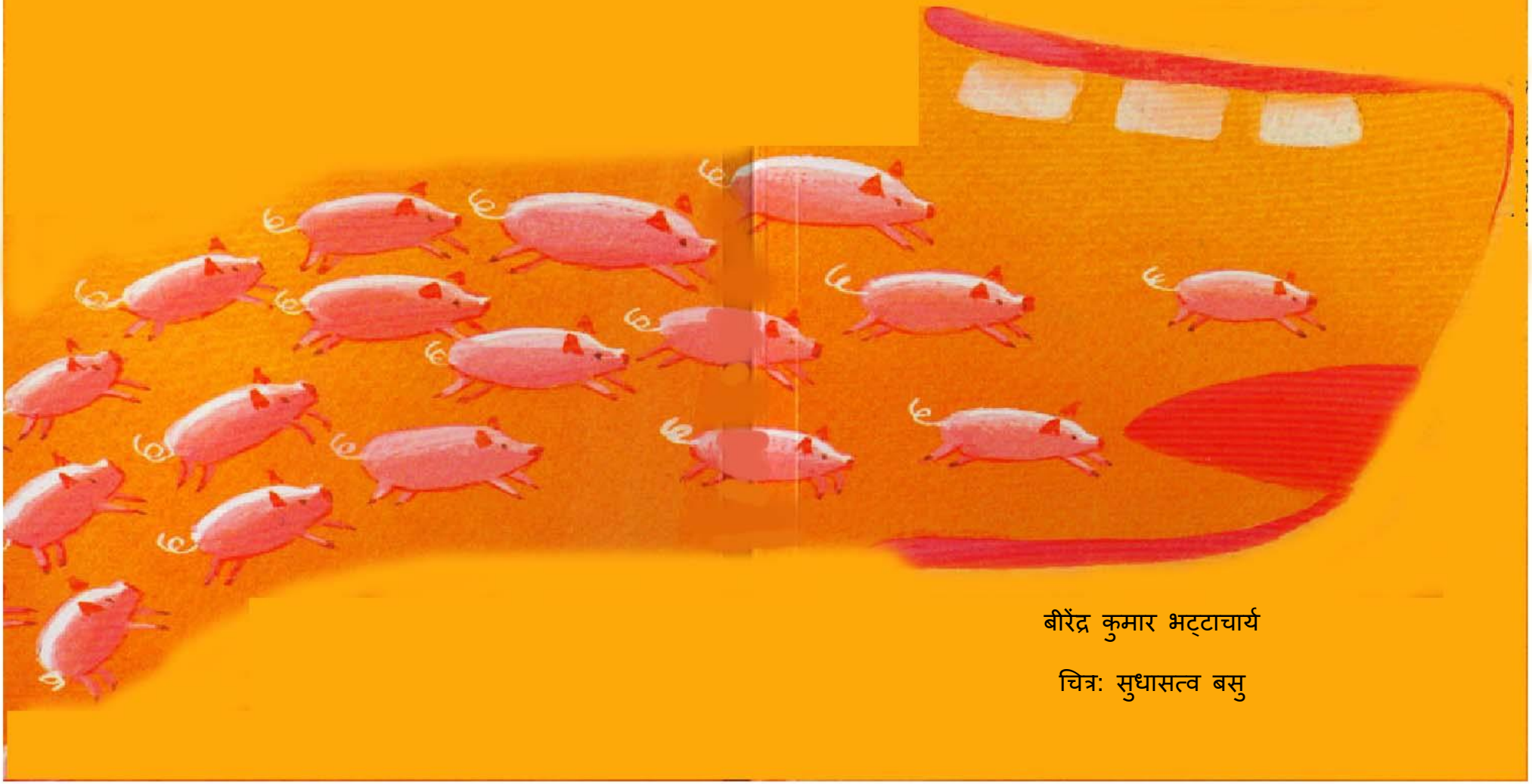

बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य

चित्र: सुधासत्व बसु

दैत्य शांगमियांग की कहानी

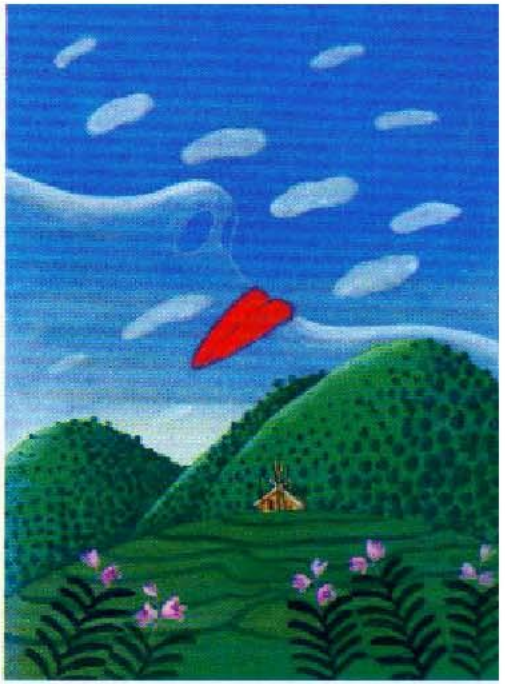

बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य

चित्र: सुधासत्व बसु

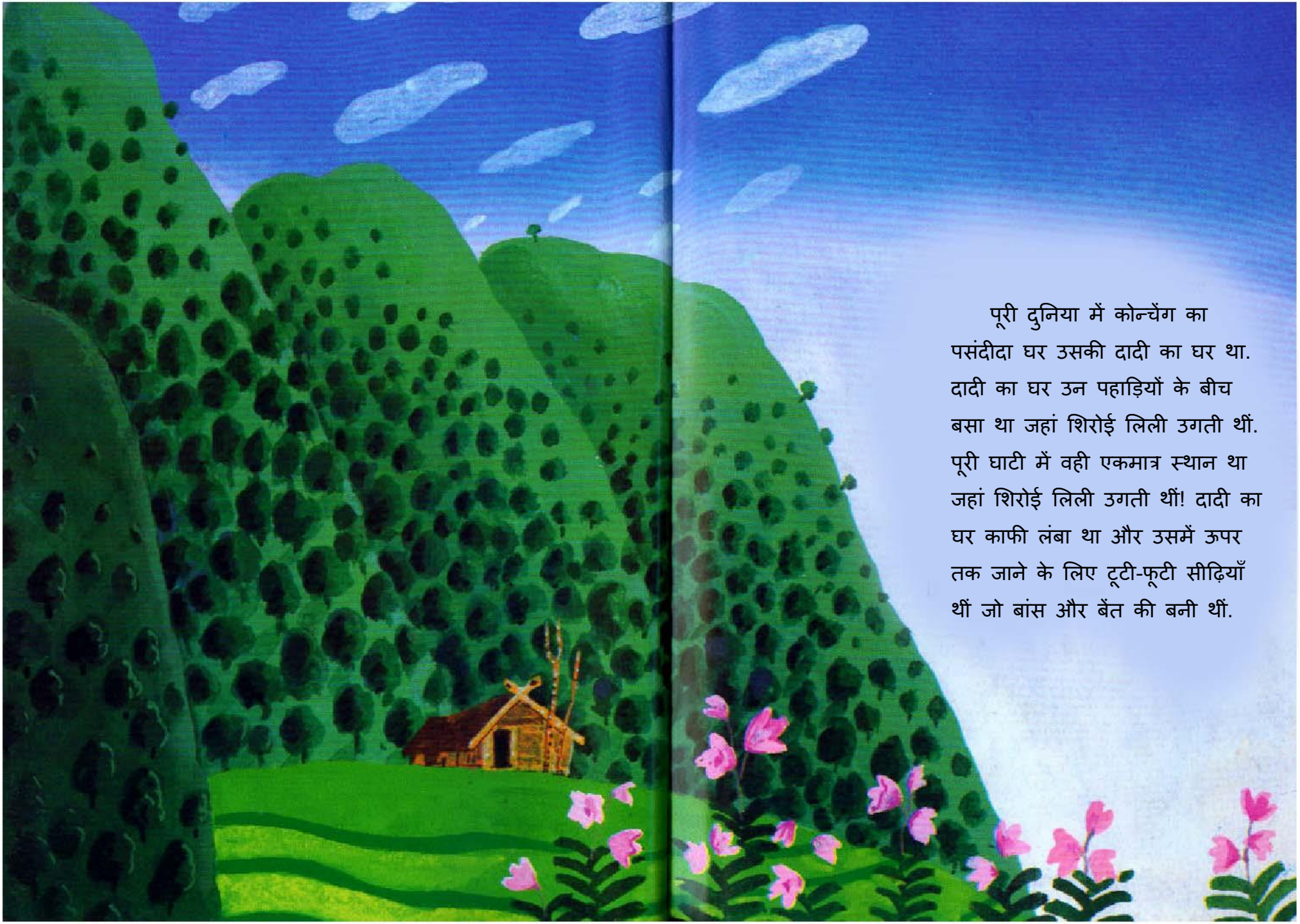

पूरी दुनिया में कोन्चेंग का पसंदीदा घर उसकी दादी का घर था. दादी का घर उन पहाड़ियों के बीच बसा था जहां शिरोई लिली उगती थीं. पूरी घाटी में वही एकमात्र स्थान था जहां शिरोई लिली उगती थीं! दादी का घर काफी लंबा था और उसमें ऊपर तक जाने के लिए टूटी-फूटी सीढ़ियाँ थीं जो बांस और बेंत की बनी थीं.

हर रात कोन्चेंग की दादी उसे एक कहानी सुनाती थीं. लेकिन कोन्चेंग की पसंदीदा कहानी दैत्य शांगमियांग वाली थी.

"शांगमियांग!" दादी आतिब ने कहा. दादी अपने घर में चोनखोम यानी लाल और सफेद रंग का शॉल लपेटे बैठी थीं.

कोन्चेंग ने पूछा, "क्या शांगमियांग वास्तव में, सच में बहुत विशाल है?"

"हाँ! और उसके हाथ?" दादी आतिब ने कहा.

"उसके हाथ और शरीर पर्वत जैसे बड़े हैं."

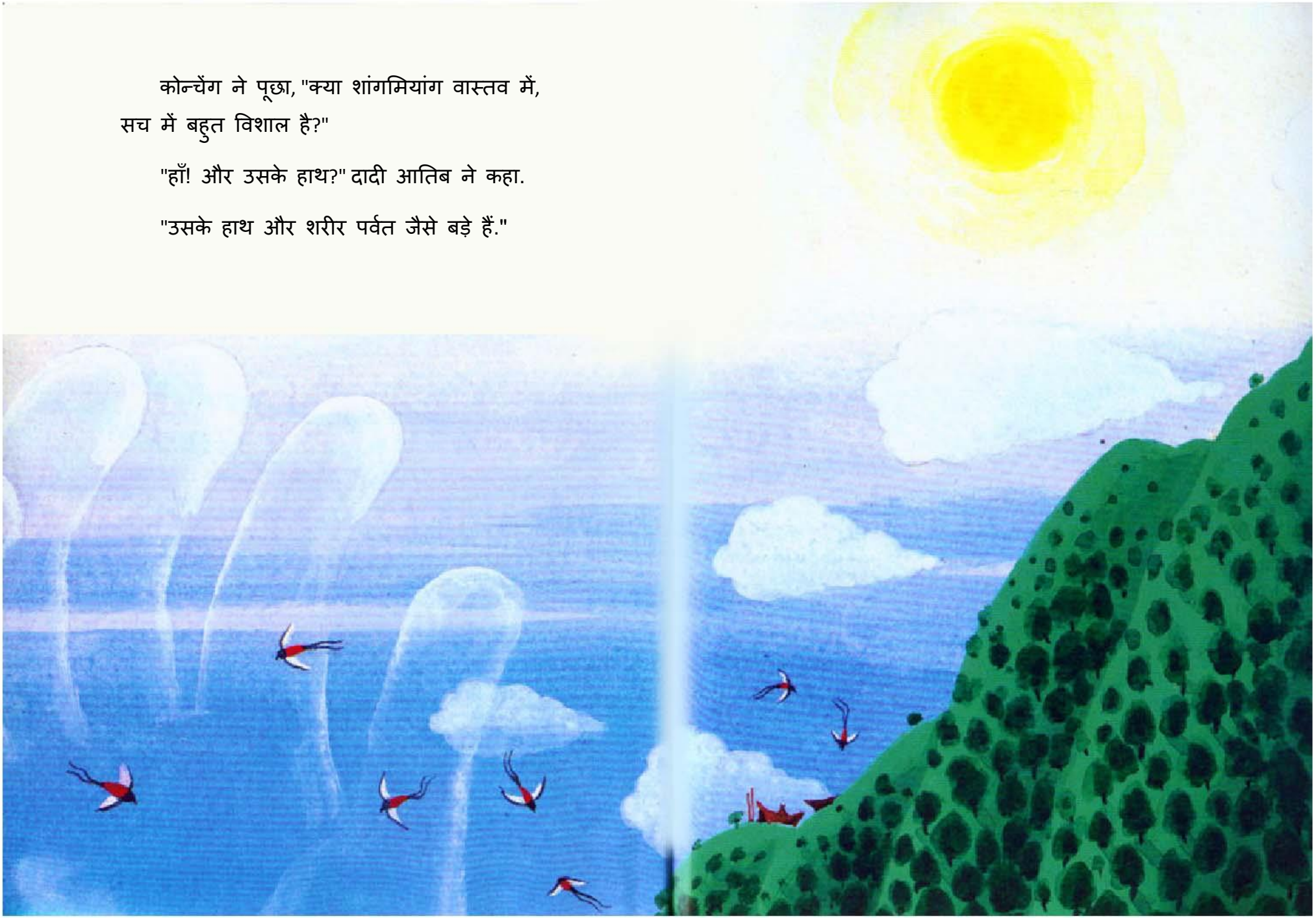

"और उसका चेहरा आकाश जितना चौड़ा है,"
कोनचेंग ने कहा. यह कहकर उसकी आंखें चौड़ी हो गईं!

उसकी दादी हँसीं. "और उस दैत्य की आँखें, सूरज
की तरह चमकदार हैं."

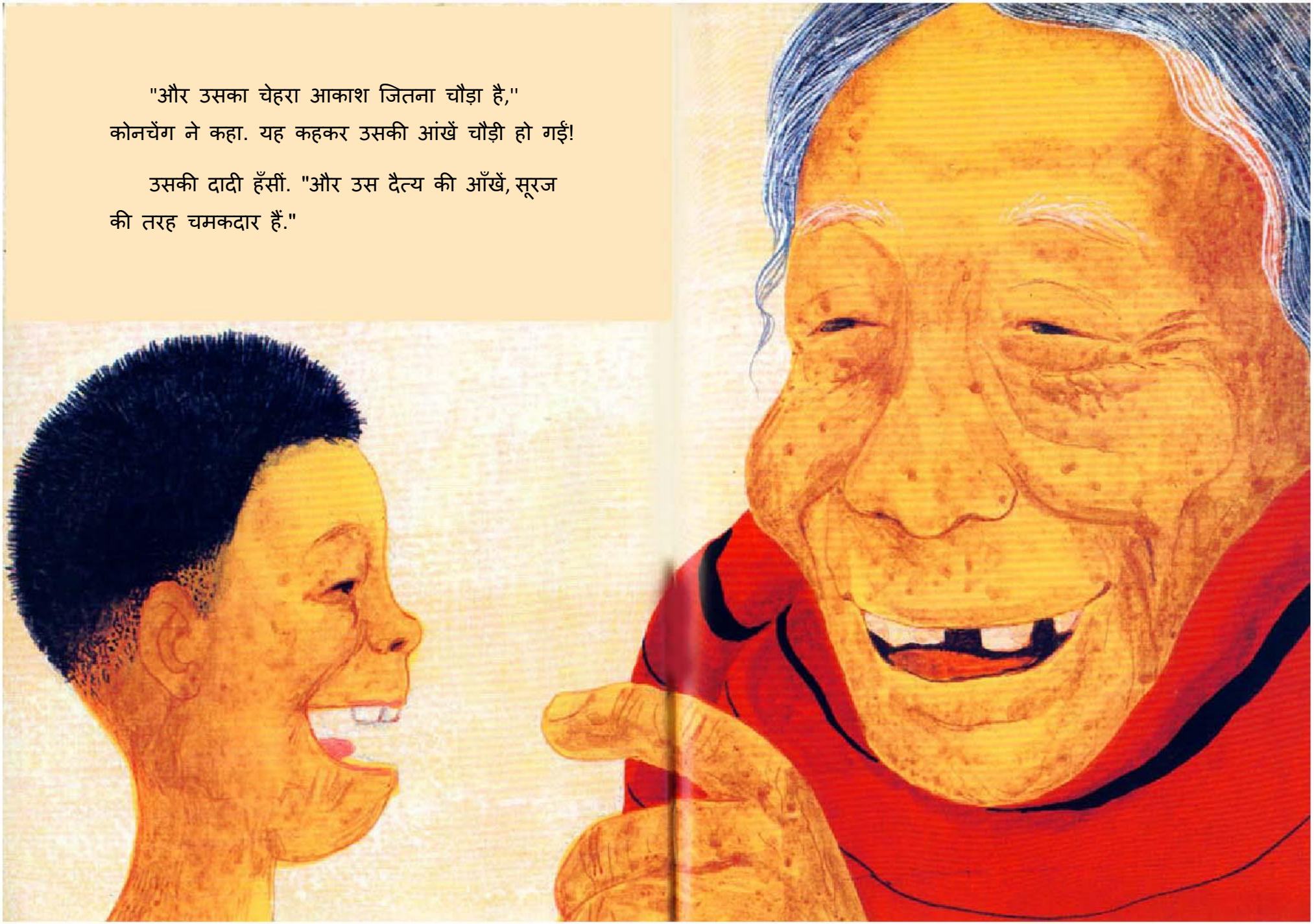

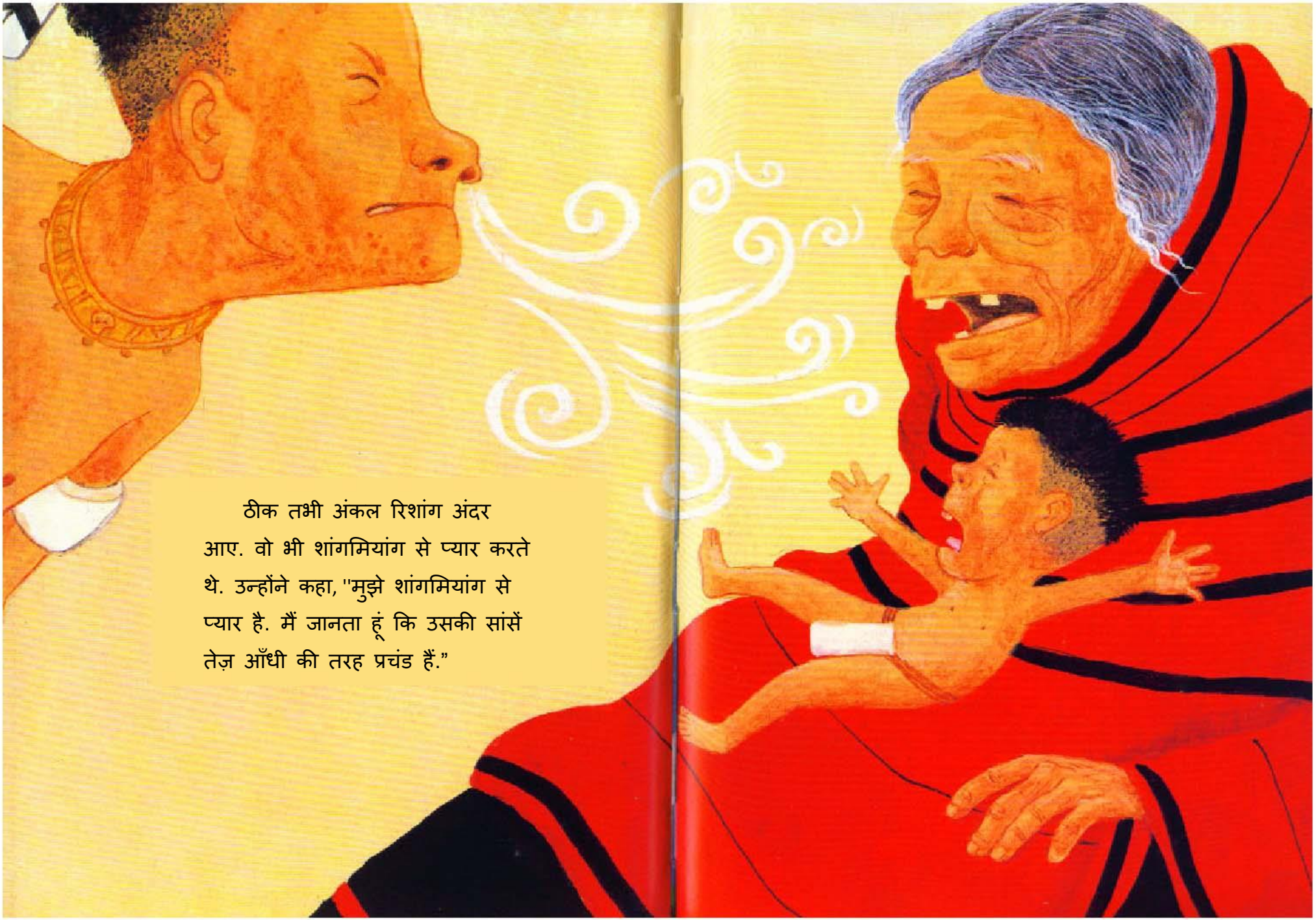

ठीक तभी अंकल रिशांग अंदर आए. वो भी शांगमियांग से प्यार करते थे. उन्होंने कहा, "मुझे शांगमियांग से प्यार है. मैं जानता हूं कि उसकी सांसें तेज़ आँधी की तरह प्रचंड हैं."

दादी आतिब ने कहा, "मेरे लिए उसका वर्णन करना मुश्किल है. मेरे पास उसके लिए शब्द नहीं हैं. वो उन सभी पहाड़ों जितना बड़ा है!"

"और," अंकल रिशांग ने कहा. 'शांगमियांग को रोज़ाना अपने भोजन के लिए एक नहीं, बल्कि सौ सुअर की जरूरत होती है!'

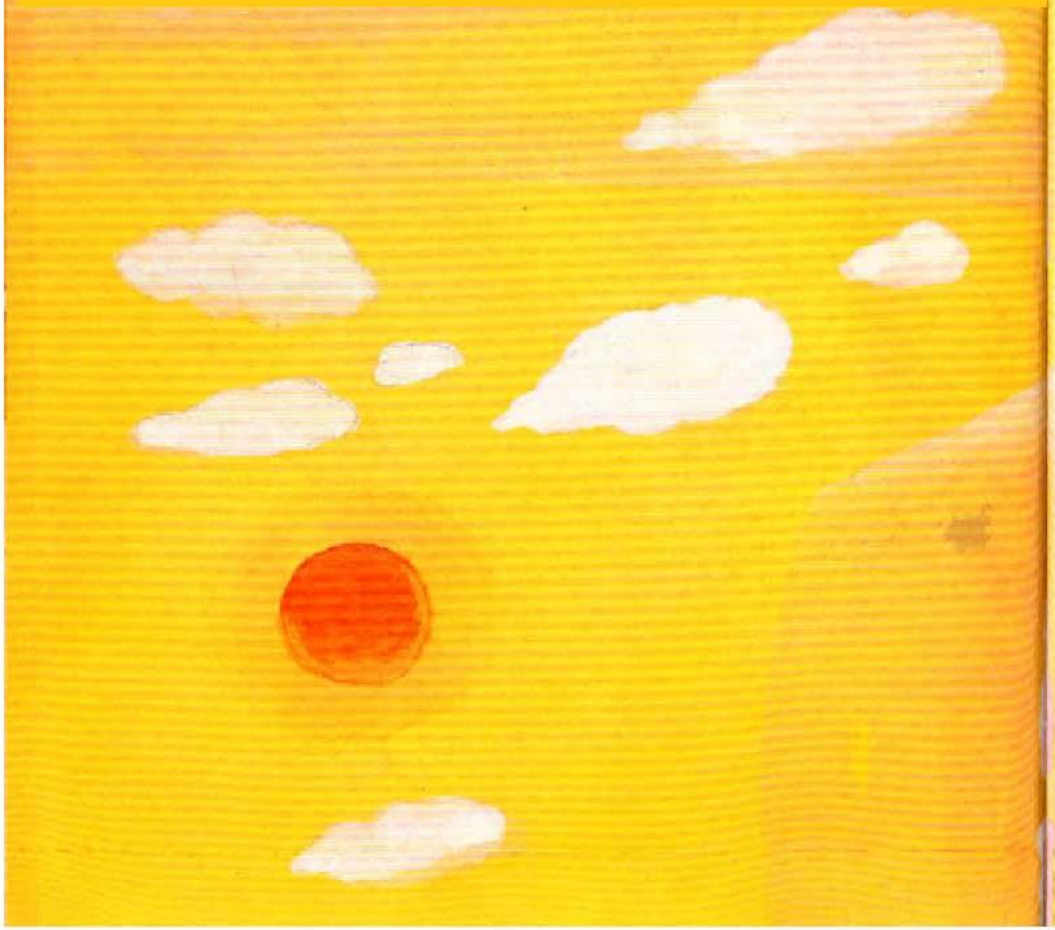

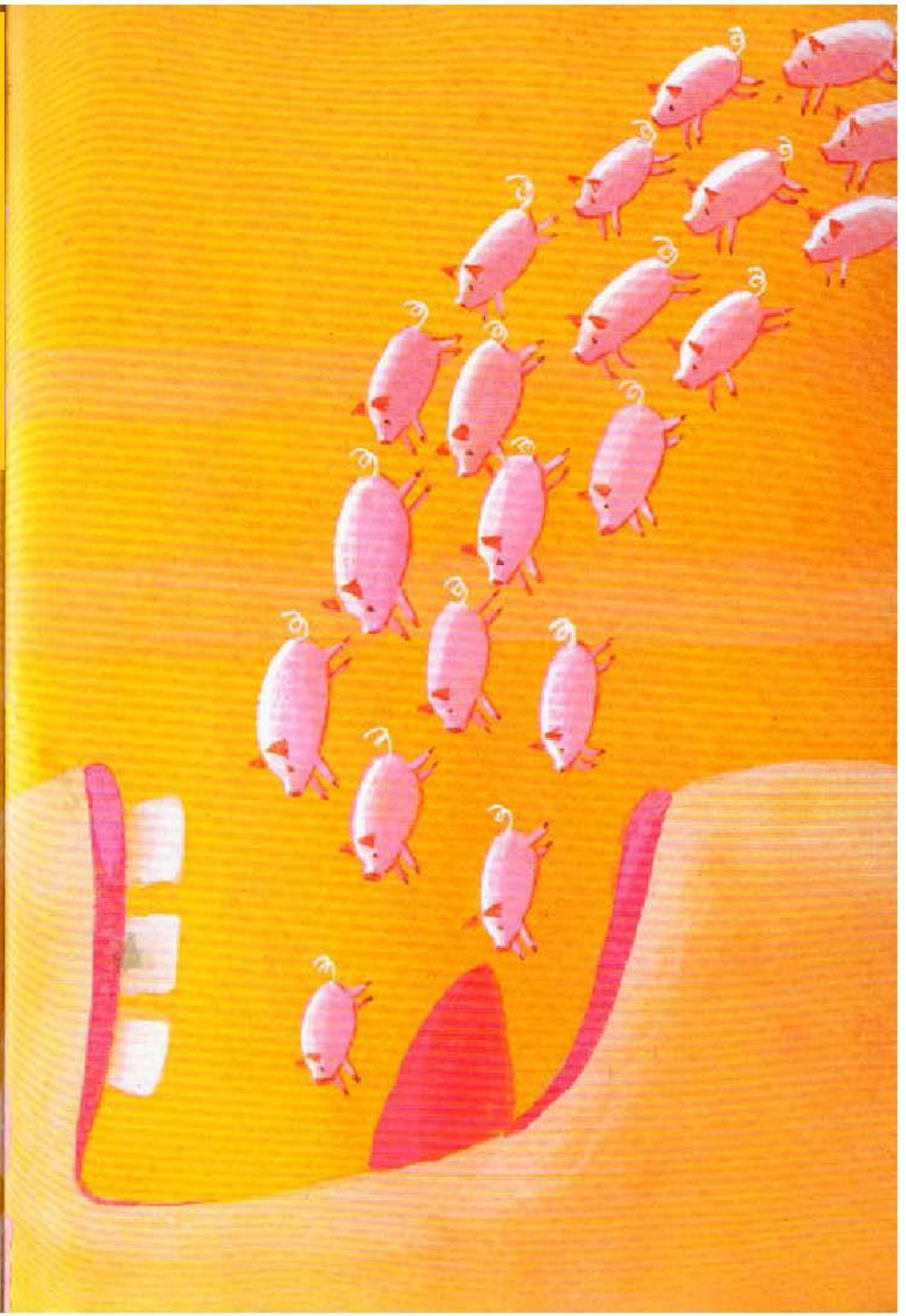

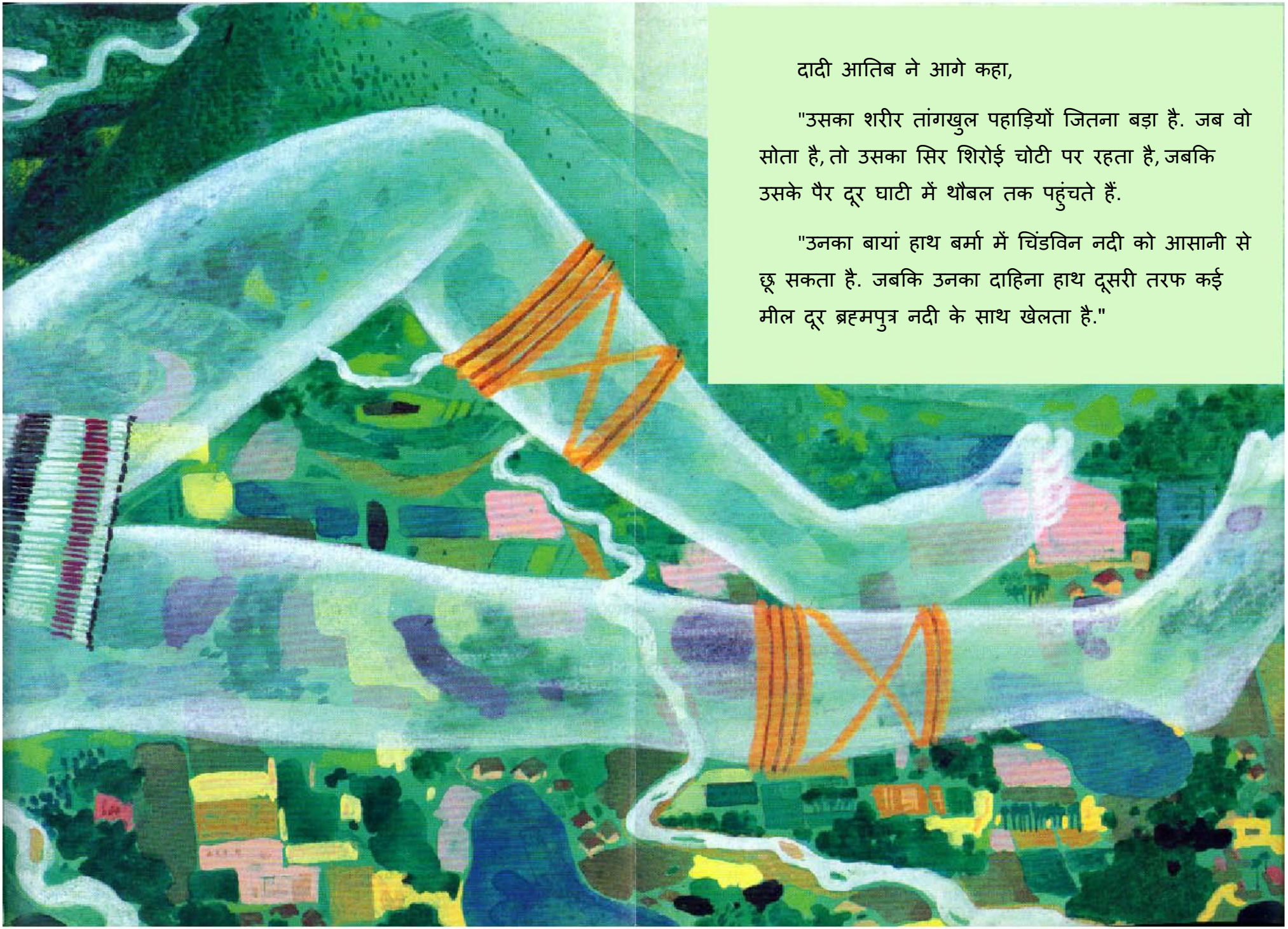

दादी आतिब ने आगे कहा,

"उसका शरीर तांगखुल पहाड़ियों जितना बड़ा है. जब वो सोता है, तो उसका सिर शिरोई चोटी पर रहता है, जबकि उसके पैर दूर घाटी में थौबल तक पहुंचते हैं.

"उनका बायां हाथ बर्मा में चिंडविन नदी को आसानी से छू सकता है. जबकि उनका दाहिना हाथ दूसरी तरफ कई मील दूर ब्रह्मपुत्र नदी के साथ खेलता है."

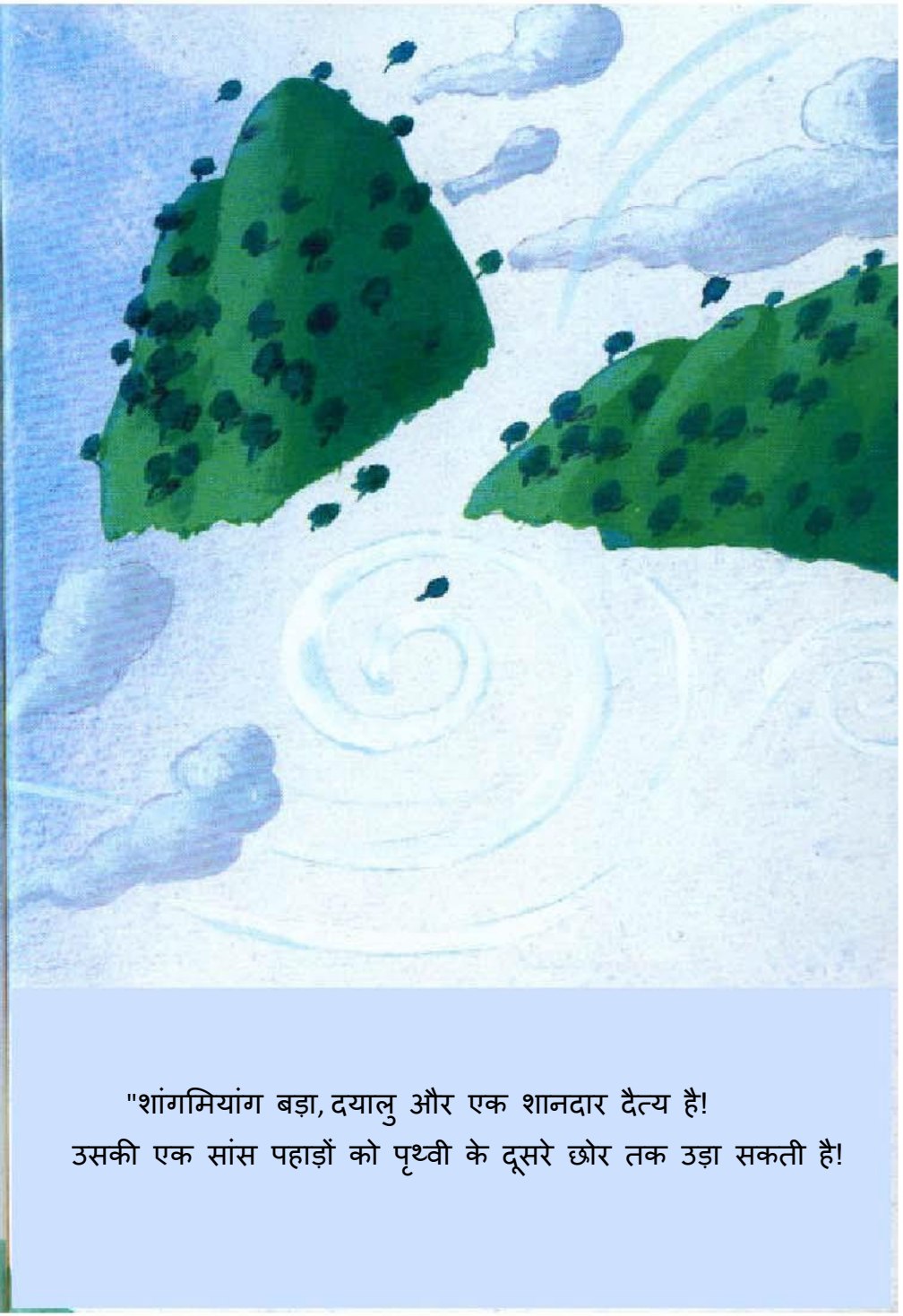

"शांगमियांग बड़ा, दयालु और एक शानदार दैत्य है!
उसकी एक सांस पहाड़ों को पृथ्वी के दूसरे छोर तक उड़ा सकती है!

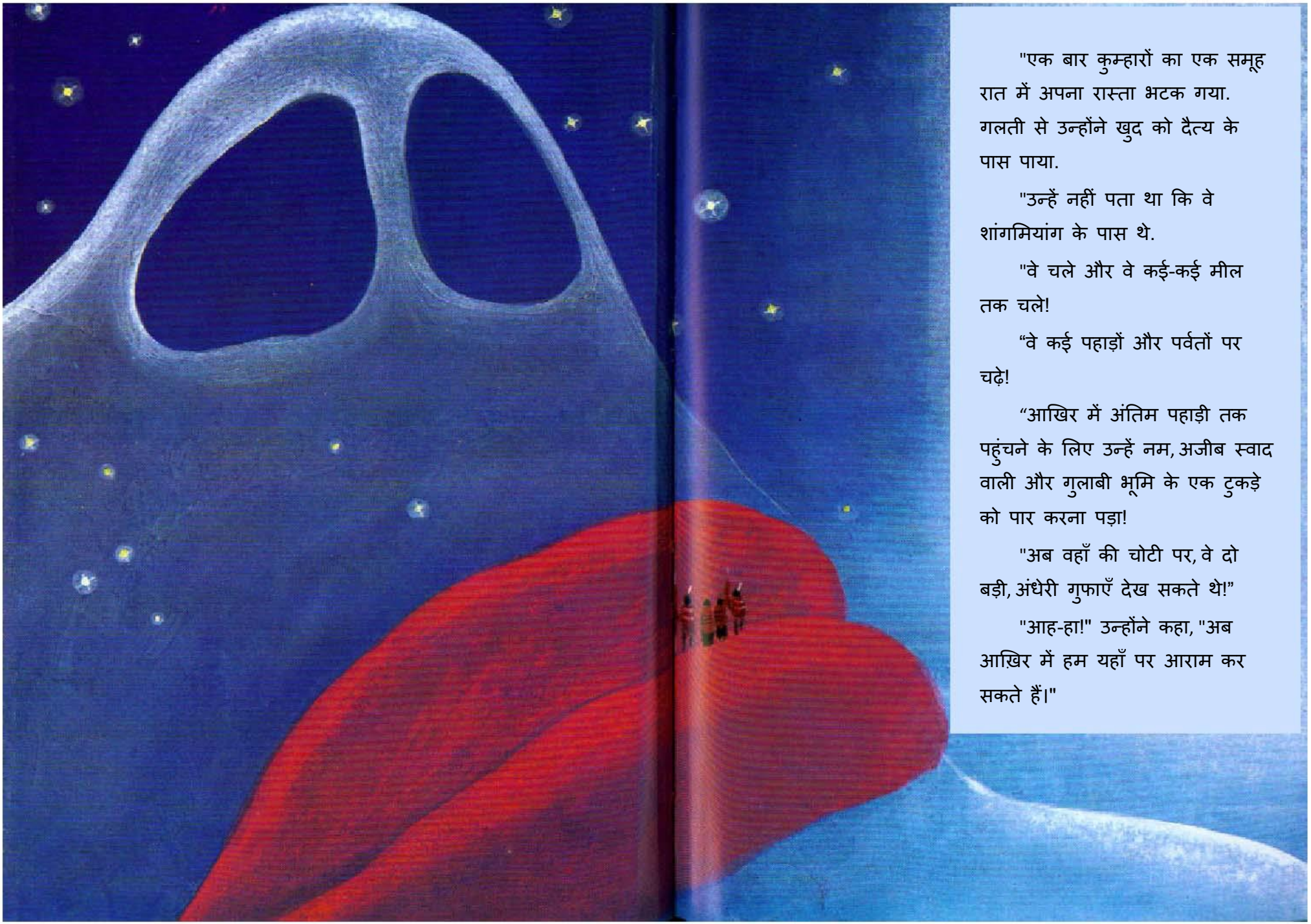

"एक बार कुम्हारों का एक समूह रात में अपना रास्ता भटक गया. गलती से उन्होंने खुद को दैत्य के पास पाया.

"उन्हें नहीं पता था कि वे शांगमियांग के पास थे.

"वे चले और वे कई-कई मील तक चले!

“वे कई पहाड़ों और पर्वतों पर चढ़े!

“आखिर में अंतिम पहाड़ी तक पहुंचने के लिए उन्हें नम, अजीब स्वाद वाली और गुलाबी भूमि के एक टुकड़े को पार करना पड़ा!

"अब वहाँ की चोटी पर, वे दो बड़ी, अंधेरी गुफाएँ देख सकते थे!”

"आह-हा!" उन्होंने कहा, "अब आख़िर में हम यहाँ पर आराम कर सकते हैं।"

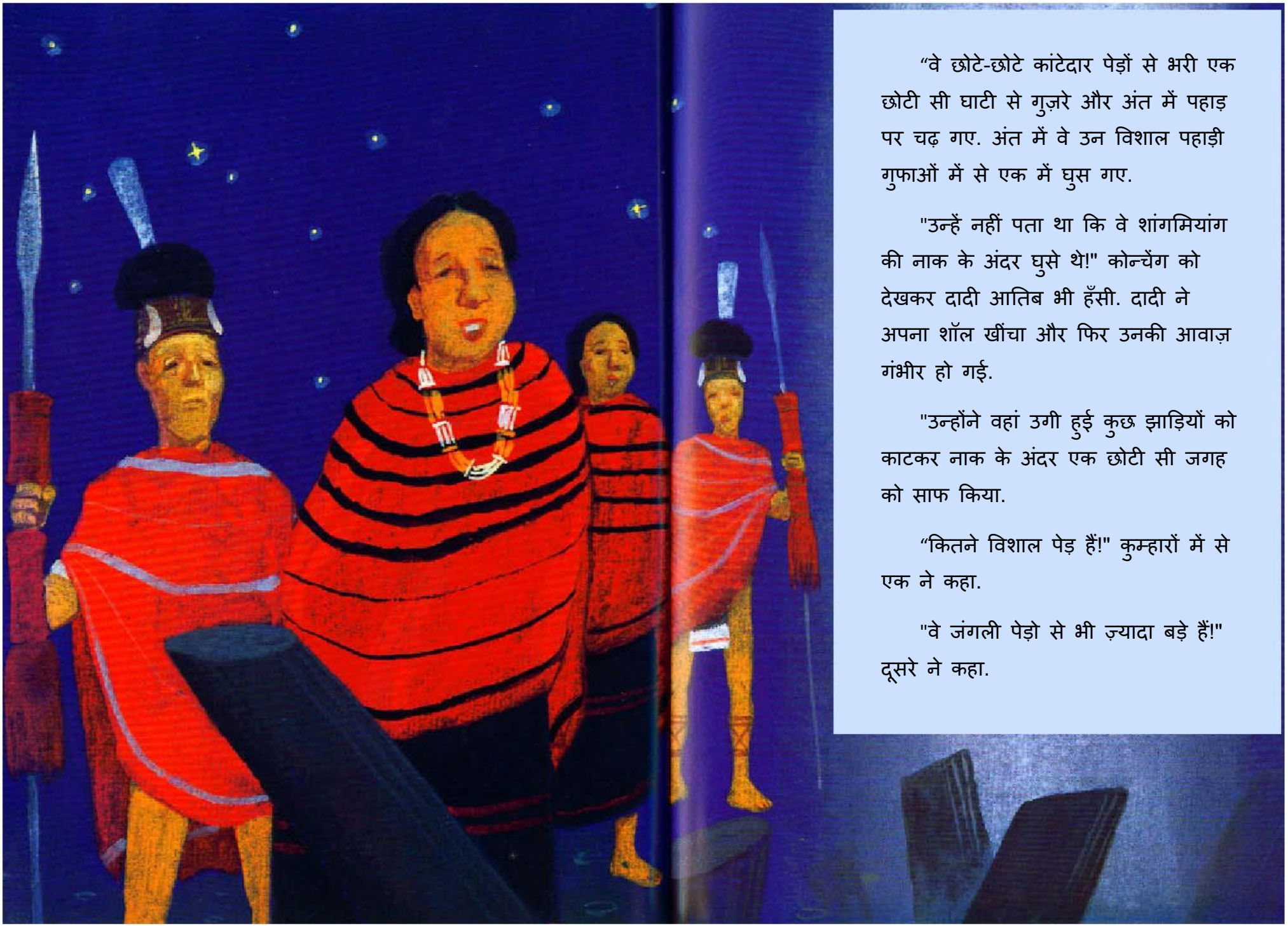

“वे छोटे-छोटे कांटेदार पेड़ों से भरी एक छोटी सी घाटी से गुज़रे और अंत में पहाड़ पर चढ़ गए. अंत में वे उन विशाल पहाड़ी गुफाओं में से एक में घुस गए.

"उन्हें नहीं पता था कि वे शांगमियांग की नाक के अंदर घुसे थे!" कोन्चेंग को देखकर दादी आतिब भी हँसी. दादी ने अपना शॉल खींचा और फिर उनकी आवाज़ गंभीर हो गई.

"उन्होंने वहां उगी हुई कुछ झाड़ियों को काटकर नाक के अंदर एक छोटी सी जगह को साफ किया.

“कितने विशाल पेड़ हैं!" कुम्हारों में से एक ने कहा.

"वे जंगली पेड़ो से भी ज़्यादा बड़े हैं!" दूसरे ने कहा.

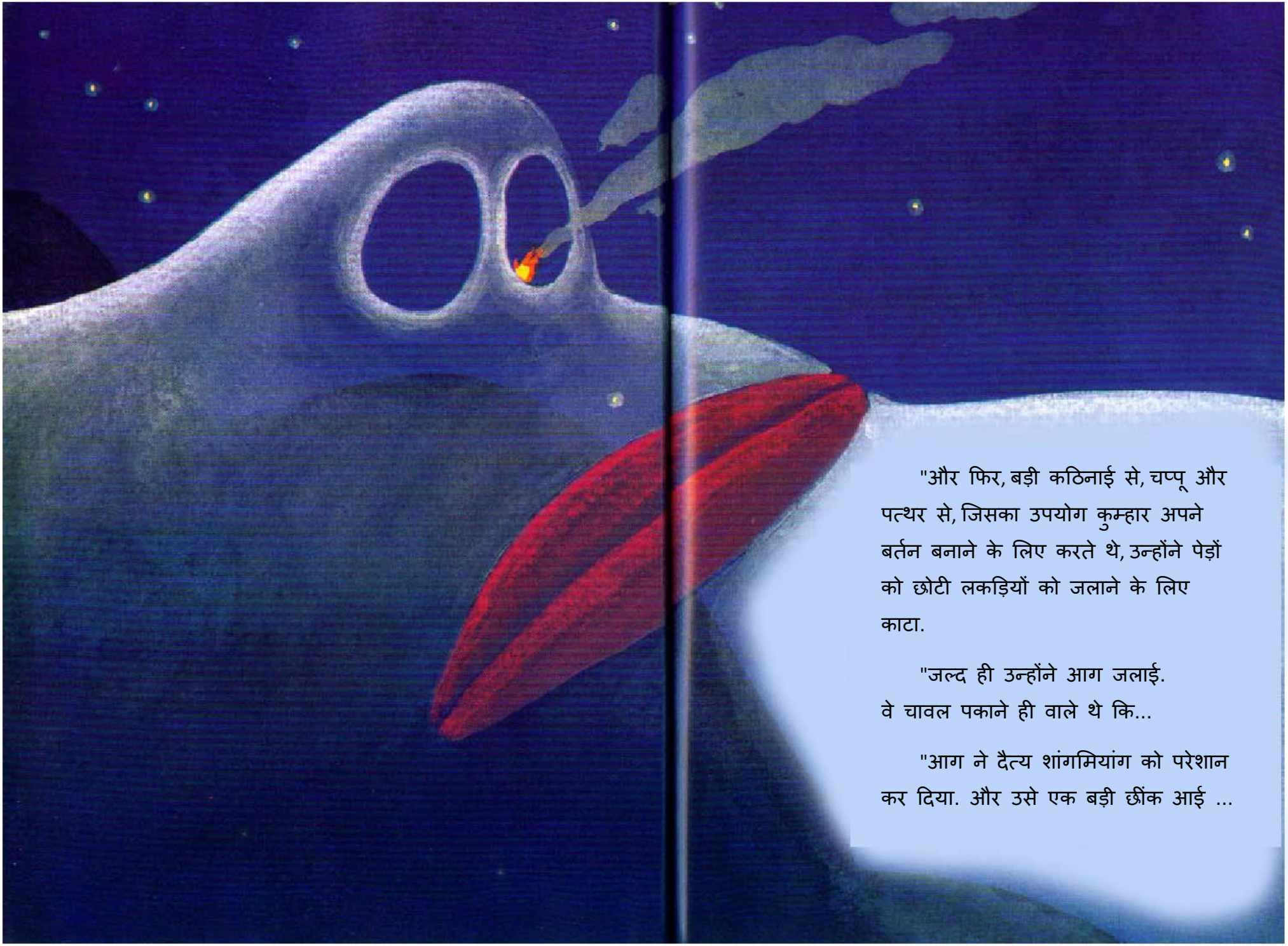

"और फिर, बड़ी कठिनाई से, चप्पू और पत्थर से, जिसका उपयोग कुम्हार अपने बर्तन बनाने के लिए करते थे, उन्होंने पेड़ों को छोटी लकड़ियों को जलाने के लिए काटा.

"जल्द ही उन्होंने आग जलाई.
वे चावल पकाने ही वाले थे कि...

"आग ने दैत्य शांगमियांग को परेशान कर दिया. और उसे एक बड़ी छींक आई ...

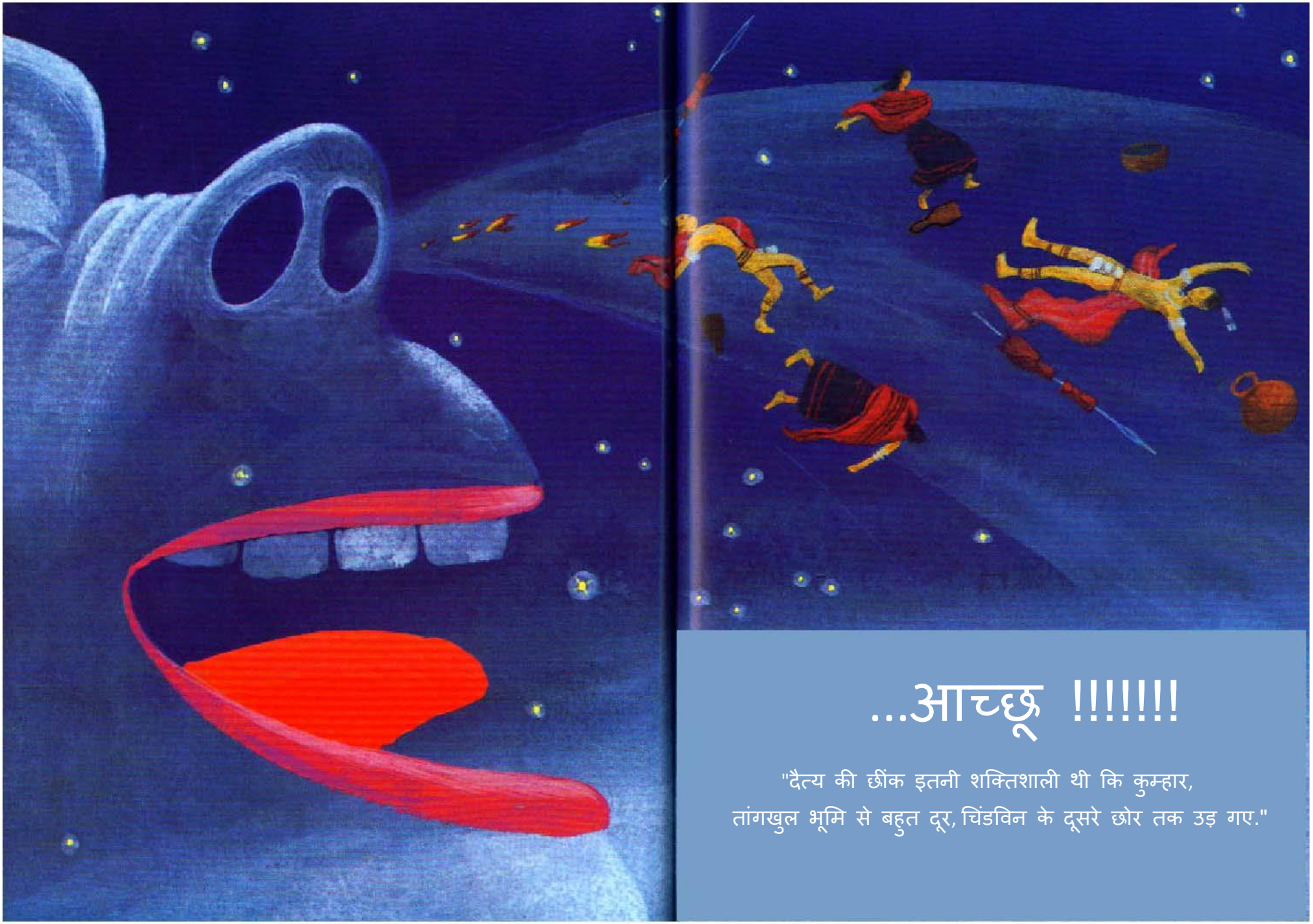

...आच्छू !!!!!!!

"दैत्य की छींक इतनी शक्तिशाली थी कि कुम्हार,
तांगखुल भूमि से बहुत दूर, चिंडविन के दूसरे छोर तक उड़ गए."

कोन्चेंग ने कहा, "यही कारण है कि आपको आज उस स्थान पर इतने सारे कुम्हार दिखाई देते हैं."

दादी ने कहा, "दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक."

"और शांगमियांग?" कोन्चेंग ने पूछा.

"उसको कुछ नहीं हुआ. वो वापिस सो गया. क्योंकि वो शिरोई परी और उस दिन के बारे में सपना देख रहा था जब परी ने अपनी लिली खो दी थी!"

बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य एक कवि, लघु कथाकार और प्रतिष्ठित उपन्यासकार थे. उन्होंने बीस उपन्यास, साठ लघु कथाएँ, सौ कविताएँ, दस नाटक और असंख्य निबंध और लेख, लिखे थे. उन्होंने बंगाली और अंग्रेजी से क्लासिक्स का असमिया में अनुवाद भी किया था. "शांगमियांग द तांगखुल जाइंट" की कहानी उनके उपन्यास यारुइंगम से ली गई है, जिसके लिए उन्हें 1961 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था. उन्होंने "मृत्युंजय" के लिए 1979 में ज्ञानपीठ पुरस्कार भी जीता था.

सुधासत्व बासु टेलीविजन के प्रसिद्ध चित्रकार, और एनीमेशन फिल्मों के निर्माता हैं. उनके द्वारा लिखित और चित्रित पुस्तक "द सॉन्ग ऑफ ए स्केयरक्रो" के लिए, उन्होंने कथा चित्रकला पुरस्कार 2002 जीता था.